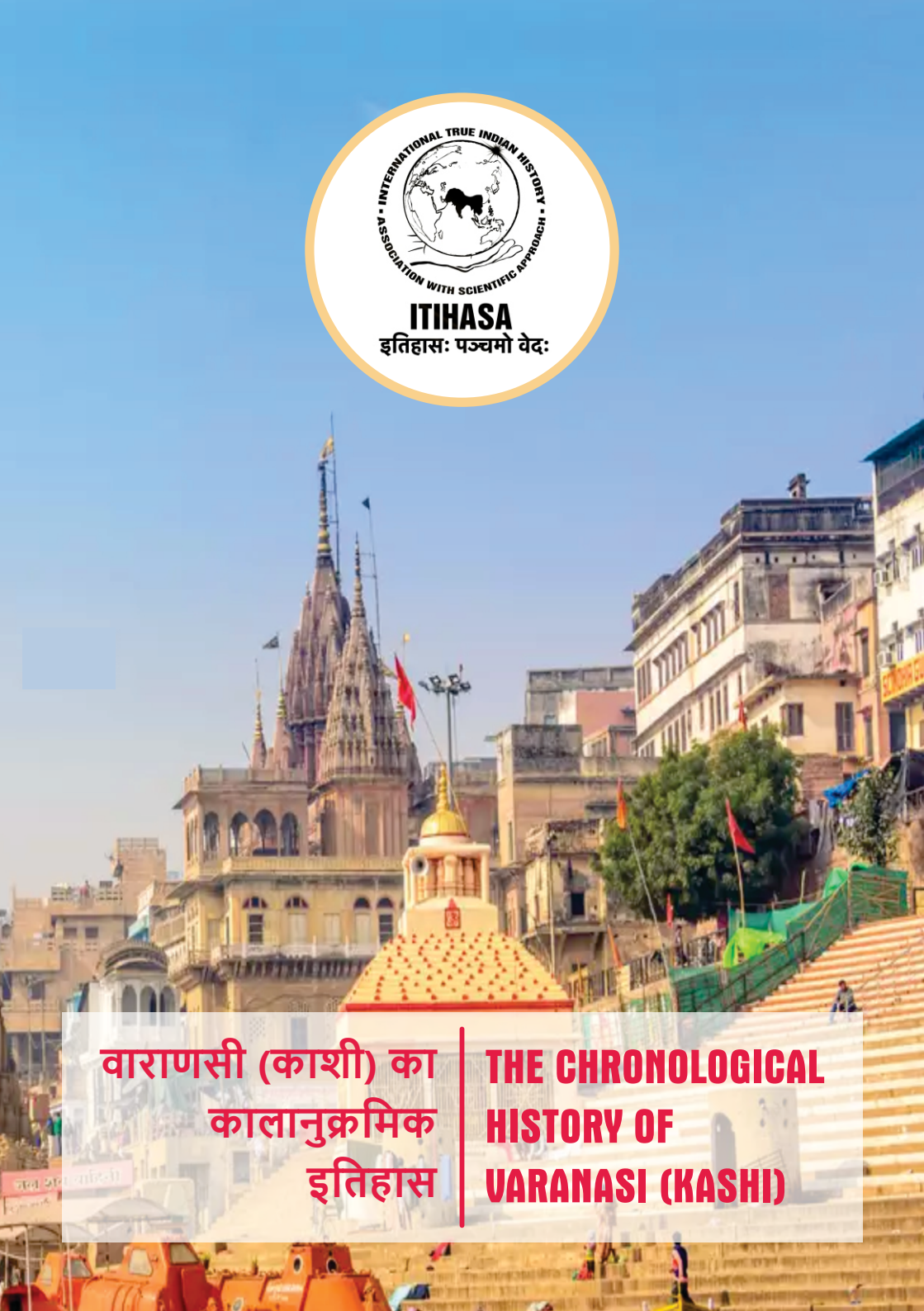

ITIHASA

इतिहासः पञ्चमो वेदः

INTERNATIONAL TRUE INDIAN HISTORY • ASSOCIATION WITH SCIENTIFIC APPROACH

वाराणसी (काशी) का कालानुक्रमिक इतिहास

THE CHRONOLOGICAL HISTORY OF VARANASI (KASHI)

शाश्वत सनातन प्रतिष्ठान का इतिहास प्रकल्प प्रस्तुत करता है काशी का कालानुक्रमिक इतिहास। यह प्रस्तुति प्रतिष्ठान के मार्गदर्शक और कालानुक्रमिक इतिहास के प्रख्यात विशेषज्ञ, विद्वान एवं शोधकर्ता डॉ. वेदवीर आर्य के शोध पर आधारित है|

- **काशी भारत का पवित्रतम एवं प्राचीनतम नगर जिसे वाराणसी भी कहा जाता है।**
- **यह कहना कठिन है कि वाराणसी नगर की स्थापना कब हुई थी लेकिन यह नगर प्रारंभिक वैदिक काल से अस्तित्व में था। यह नगर वारणा और असी नदियों के बीच में बसा हुआ है।**
- **प्राचीन इतिहास यह बताता है कि वाराणसी पर लगभग 11400 ईसा पूर्व असुर राजा क्षेमक का शासन था। हर्यश्व के पिता एवं पांचाल राजकुमार दिवोदास ने क्षेमक को हराकर काशी पर अधिकार कर लिया था।**
- **राजा हर्यश्व और उनके वंशजों ने लगभग 11350 - 11150 ईसा पूर्व वाराणसी पर शासन किया।**
- **हैहय राजाओं ने वाराणसी पर आक्रमण किया और राजा हर्यश्व युद्ध में मारे गए।**
- **हर्यश्व के पुत्र सुदेव और उनके पोते दिवोदास ने हैहय को हराकर वाराणसी पर पुनः अधिकार कर लिया।**
- **हर्यश्व वंश (11350-11150 ईसा पूर्व) में अनेक योग्य राजा हुए जैसे हर्यश्व, सुदेव, दिवोदास, प्रतर्दन, वत्स (कुवलाश्व), अलर्क और सन्नति।**
- **दिवोदास के प्रपौत्र अलर्क (राजा वत्स और मदालसा के पुत्र) को ऋषि अगस्त्य (11270-11180 ईसा पूर्व) की पत्नी लोपामुद्रा ने आशीर्वाद दिया था।**
- **राजा सन्नति के बाद, काश (अयु के प्रपौत्र और क्षत्रवृद्ध के पौत्र) ने चंद्र वंश के शासन की स्थापना की वाराणसी में किया और नगर का पुनर्निर्माण या विस्तार किया। यही कारण है कि वाराणसी को काशी (काश द्वारा निर्मित) के नाम से जाना जाने लगा।**
- **ऋग्वेद काल के काशी राजा काश, काश्य, दीर्घतपस्, धन्व, धन्वंतरि और अजातशत्रु।**
- **धन्वंतरि (10950 ईसा पूर्व) आयुर्वेद की एक शाखा के संस्थापक थे और सुश्रुत उनके शिष्य थे।**
- **काशी राजा अजातशत्रु विदेह जनपद के राजा जनक के समकालीन थे।**
- **अथर्ववेद की पिप्पलाद संहिता काशी को संदर्भित करती है। शतपथ ब्राह्मण का उल्लेख है कि शतानीक सत्रजित ने काशी के राजा को वशीभूत किया, सात्वतों के वंश के भरत ने काशी पर विजय प्राप्त की और धृतराष्ट्र (काशी के वैदिक राजा) और अजातशत्रु काशी के राजा थे।**
- **उत्तर वैदिक, रामायण और रामायण के बाद के युगों के दौरान धीरे-धीरे, कोसल और विदेह जनपद काशी जनपद पर हावी हो गए।**
- **महाभारत काल में काशीराज काशी के राजा थे। भीमसेन ने काशी राजा को हराया।**
- **पुराणों के अनुसार महाभारत काल के बाद काशी के 25 राजा हुए।**
- **राजा शिशुनाग (2024 - 1984 ईसा पूर्व) काशी के राजा थे जिन्होंने मगध पर विजय प्राप्त की और मगध**

में शिशुनाग वंश के शासन की स्थापना की। उनके पुत्र ने काशी पर राज्य किया जब शिशुनाग मगध पर शासन कर रहे थे।

- **प्रतीत होता है, राजा ब्रह्मदत्त और उनके पुत्र प्रसेनजित बुद्ध के जीवनकाल (1944 - 1864 ईसा पूर्व) के दौरान काशी पर शासन कर रहे थे।**
- **मगध के महापद्म नंद ने 1662 ईसा पूर्व काशी के राज्य पर अधिकार कर लिया।**
- **राजघाट की खुदाई में अविमुक्तेश्वर (9-10 शताब्दी ईसा पूर्व) की एक मुहर मिली थी जो प्राचीन अविमुक्तेश्वर मंदिर के अस्तित्व को इंगित करती है।**
- **आदि शंकराचार्य (568-536 ईसा पूर्व) ने काशी में प्रवास किया था।**
- **मण्डन मिश्र वाराणसी में रह रहे थे।**
- **बाद में गुप्त राजा वैन्य गुप्त ने अविमुक्तेश्वर मंदिर का पुनर्निर्माण किया।**
- **चीनी यात्री हुआन त्सांग ने काशी के मंदिर का उल्लेख किया है।**
- **कलचुरी-छेदी राजा कर्णदेव (सन 389 – 419 ईसवी) ने वाराणसी को अपनी राजधानी बनायी और कर्णदेव के शासनकाल के दौरान कश्मीर कवि बिल्हण ने वाराणसी आये थे ।**
- **अविमुक्तेश्वर मंदिर को मुहम्मद गोरी और उसके दास ऐबक ने ध्वस्त कर दिया था।**
- **मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया था लेकिन जौनपुर के शर्की सुल्तान द्वारा फिर से ध्वस्त कर दिया गया था।**
- **वाराणसी में मंदिर का पुनर्निर्माण नारायण भट्ट ने अकबर के समय में टोडल मल के संरक्षण में किया था।**
- **औरंगजेब ने अविमुक्तेश्वर मंदिर को ध्वस्त कर दिया और उस पर एक मस्जिद का निर्माण किया।**
- **चूंकि अविमुक्तेश्वर मंदिर को औरंगजेब द्वारा अपवित्र किया गया था और उस पर एक मस्जिद का निर्माण किया गया था, इसलिए अहिल्याबाई होल्कर ने 1776-78 इसी के आसपास वर्तमान काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण किया ।**
- **1835 ई. में महाराजा रणजीत सिंह ने मंदिर के शिखर और द्वार पर चढ़ाने के लिए मंदिर को 1 टन सोना दान में दिया था।**
- **प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का निर्माण करवाया और 13 दिसंबर 2021 को उद्घाटन किया था।**

इस प्रकार तेरह हज़ार पांच सौ वर्षों से भी पुराना है काशी का इतिहास। काशी के कालानुक्रमिक इतिहास पर काम करने वाले सभी शोधार्थी को शाश्वत सनातन प्रतिष्ठान चर्चा, विमर्श एवं संवाद हेतु अपने शोध के साथ सादर आमंत्रित करता है।

Shri. Vijay Kaushal Ji Maharaj
(Prerana Srot)

Shri. K. N. Govindacharya
(Founder)

Shri Pavan Sriwastav
(Chief Patron)

Dr. Vedveer Arya
(Mentor, ITIHASA)

Dr. Vivek Kumar
(Organising Secretary)

Shri Sanjay Sharma
(Convener)

Prof. Rakesh Pandey
Convener (ITIHASA)

Sushri Anwita Chaudhary
National Coordinator

Dr. Md. Yahya Saba
Co-Convener, ITIHASA

SAMWAD FORUM सवाद

Samwad Forum

अरविंद सम्मान

Eternal Hindu
॥ शाश्वत हिंदू ॥

RASHTRA GAATHA

rashtragaatha

SANATAN BHAV JAGRUTI

hindueternal | itihasaorg | rashtragaatha

@HinduEternal | Samwad Forum | eternal_hindu

Navi Mumbai
S - 38, Parth Building,
Sector – 13, Kharghar,
Navi Mumbai – 410210
+91 8657144149

New Delhi
4th Floor, B – 78,
Dashrathpuri, Palam Dabri-
Road, New Delhi – 110045
+91 8657144159

Himachal Padesh
Swami Vivekanand School,
Gagret, Una,
Himachal Pradesh - 177201
+91 8657144169

Email : hindueternal@gmail.com | **Website :** www.eternalhindu.org